सभी को जोहार!

मेरा नाम पूदी सोरेन है, मै गॉव पहाड़ पुर, चकाई, जमुई बिहार से हूँ |

मै, फाओ की जी-9 की मीटिंग भारत में कराने के लिए, भारत सरकार की आभारी हूँ | जिसके कारण मै इस प्रोजेक्ट को सपोर्ट करने वाले आई टी पी जी आर के सदस्यों से मिल पायी हूँ | जिन्होंने, जंहा मै रहती हूँ वंहा, मेरे परिवार और मेरे समुदाय को सपोर्ट किया है | मै आई टी पी जी आर के सचिवालय का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे यंहा शामिल होने का अवसर दिया है |

मुझे आप लोग के बीच आ के बहुत खुशी हो रही है | मेरे क्षेत्र में यह प्रोजेक्ट नहीं आता तो मै कभी दिल्ली नहीं देख पाती | मै पहली बार आज दिल्ली आई हूँ | आप सभी का मै हृदय से आभारी हूँ |

प्रोजेक्ट के तहत मेरा "मंडुआ की पिथी" बनाने का वीडियो बना, जिससे मेरे क्षेत्र की बात / मेरी भावनायें आप लोगो तक पहुंची, इसके लिए मै बहुत खुश हूँ |

मेरा उम्र 27 साल है आठवीं तक मैंने विधालय किया है | मेरे पास छोटा सा जमीं है और रबी के समय पानी की कोई उपलब्धता नहीं है | इसलिए मै, ईठ के भट्टे पर मजदूरी करती थी, जब प्रोजेक्ट मेरे क्षेत्र में आया, तब मुझे खेती के लिए पैरवी ने लोटनी, अरहर और मंडुआ के लिए बीज दिया | मोटा अनाज , दलहन और तिलहन की खेती से मैं दुबारा पूर्ण रूप जुड़ पायी और फिर धीरे-धीरे भट्ठे पर जाना बंद कर दिया | मुझे अब किसान होने पर गर्व है, जब मै फ्री रहती हूँ तो सिलाई करती हूँ |

जब हम बच्चे थे तब लोटनी और मंडुआ देखा था, बहुत समय से इसका बोना रुक गया था गॉव में | लेकिन अभी पुनः क्षेत्र में सरसो की देसी किस्म :लोटनी एवं मंडुआ और दलहन की किस्मे आ गयी है इसके लिए मै आई टी पी जी आर का धन्यवाद करती हूँ |

कई सालो पहले हमने जिस मंडुआ और लोटनी को खो दिया था, उसका गॉव में रिवाइवल हुआ | इसे, मैंने परिवार और बच्चो के लिए मंडुआ की पेथी और मंडुआ की रोटियां और लोटनी का तेल खाने में उपयोग किया | यह लोटनी का तेल, बाजार के सरसो के तेल से ज्यादा स्वादिष्ट है और अच्छा होता है क्योकि लोटनी और मंडुआ देसी बीज है | पहले मै, मेरे बच्चे को के लिए बाहर बाजार से तेल और दाल खरीद के लाती थी, जिसके कारन मेरा 500 से 600 रुपया / प्रति माह लगता था | अब में अपने बच्चो को मेरे खेत में ऊगा हुआ दाल, सब्जी, मंडुआ, तेल की अच्छी चीचे देती हूँ | अभी बाजार में होने वाला मेरा खर्चा आधा हो गया है | अब मै इस बचे हुए पैसो को अपने दोनों बच्चो की शिक्षा में लगा देती हूँ |

गॉव में अभी दलहन, मंडुआ और तिलहन का खेती ज्यादा हुआ (रकबा बढ़ा) है | लोगो ने 15 -20 साल बाद पुनः क्षेत्र में मंडुआ और लोटनी को लगाया है| हम सभी किसान, सामुदायिक बीज बैंक से बीज ले रहे है| हमने अपना बीज खुद पैदा किया है उसको बीज-बैंक में रखते है | सीजन आने पर हम बीज बैंक से बीज निकालते है और कटाई के बाद बैंक में बीज जमा कर देते है | हमे देख के आस -पड़ोस के लोग भी इसमें रूचि ले रहे है |

आज मै अपने परिवार के लिए यह उगाती हूँ, भविष्य में इसे बाजार में ले के जाउंगी, ताकि कुछ आमदनी हो | लेकिन सीमांत किसान होने के नाते मेरे सामंने कुछ चुनौतियां भी है आज जब बरसात की मात्रा कम होती जा रही है, बरसात बेमौसम हो रही

है और कीड़ो का प्रकोप बढ़ रहा है ऐसे समय में चना, लोटनी और मंडुआ की फसल ने मेरी मदद की है जो कम पानी में हो जाती है जो रबी की फसल है । इस साल जैसा सूखा पड़ गया है बरसाती मौसम में भी जून -जुलाई में एक -आधी बरसात गिरी है फिर भी मेरा रागी/मंडुआ का फसल अच्छा हुआ है। हम लोगो के पास पानी के सिचाई की कोई व्यवस्था नहीं है हम लोग खेती के लिए बरसात है। सिचाई बहुत महंगा है । हमने तिलहन का रकबा अपने खेत में बढ़ाया है, लेकिन गॉव में बीज से तेल निकालने की कोई व्यवस्था नहीं है, इसके लिए हमे शहर जाना होता है अगर गॉव में तेल निकालने की एक मशीन हो जाये, तो हम लोगो के लिए यह बहुत अच्छा हो जायेगा। आज सब्जियों के रेट काफी बढ़ गए है और सब्जी का देसी-बीज सभी जगह से लुप्त हो गया है इसलिए मई सब्जी का एक नर्सरी लगाना चाहती हूँ। ताकि मेरे परिवार के लिए मई खुद ही सब्जी ऊगा पाउ और सब्जी का पौध आस -पड़ोस में भी दे दू।

मै आशा करती हूँ, जिस तरह से इस प्रोजेक्ट के माध्यम से मै आई टी पी जी आर से जुडी, भविष्य में भी आई टी पी जी आर अपने सहयोग को मेरे गॉव और दुनिआ के लिए बनाये रखेगा।

सभी को प्रणाम। **जोहार!**